SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मनोहर श्याम जोशी की कहानियों में मानव मूल्य

सुशील कुमार कतरौलिया, शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
श्रद्धा सक्सेना, (Ph.D.)
शास. एम.एल.बी. उत्कृष्ट महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
सुशील कुमार कतरौलिया, शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
श्रद्धा सक्सेना, (Ph.D.)
शास. एम.एल.बी. उत्कृष्ट महाविद्यालय,
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/01/2021
Revised on : -----
Accepted on : 18/01/2021
Plagiarism : 01% on 11/01/2021

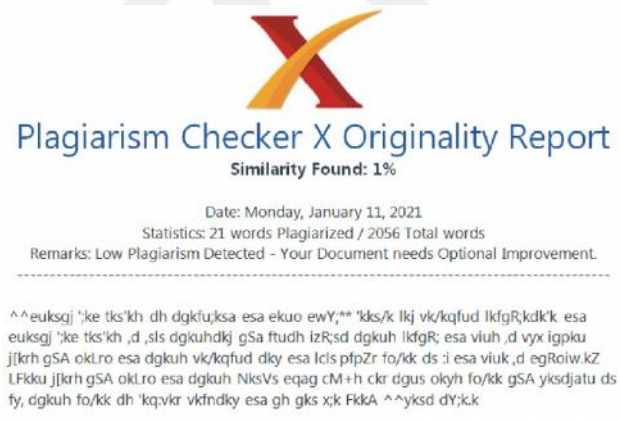
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Monday, January 11, 2021
Statistics: 21 words Plagiarized / 2056 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

^^euksgj ';ke tks'kh dh dgkfu;ksa esa ekuo ewY;** 'kks/k lkj vk/kqfud lkfgR;kdk'k esa euksgj ';ke tks'kh ,d ,sls dgkuhdkj gSa ftudh izR;sd dgkuh lkfgR; esa viuh ,d vyx igpku j[krh gSA okLro esa dgkuh vk/kqfud dky esa lcls pfpZr fo/kk ds :i esa viuk ,d egRoiw.kZ LFkku j[krh gSA okLro esa dgkuh NksVs eqag cM+h ckr dgus okyh fo/kk gSA yksdjatu ds fy, dgkuh fo/kk dh 'kq:vkr vkfndky esa gh gks x;k FkkA ^^yksd dY;k.k

शोध सार

आधुनिक साहित्याकाश में मनोहर श्याम जोशी एक ऐसे कहानीकार हैं जिनकी प्रत्येक कहानी साहित्य में अपनी एक अलग पहचान रखती है। वास्तव में कहानी आधुनिक काल में सबसे चर्चित विधा के रूप में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कहानी छोटे मुंह बड़ी बात कहने वाली विधा है। लोकरंजन के लिए कहानी विधा की शुरूआत आदिकाल में ही हो गया था। ''लोक कल्याण भावना और लोकरंजकतल का जितना सुंदर समन्वय इस विधा में होता हुआ दिखायी पड़ता है, उतना साहित्य की किसी अन्य विधा में नहीं मिलता।''[1]

मुख्य शब्द

मानव मूल्य।

मनोहर श्याम जोशी की कहानियाँ प्रचलित बासी कहानी–कला के अभ्यास जड़ फार्मूलों को ध्वस्त करती हैं और प्रगति–प्रयोग की व्यंग्य कथा के लिए नई राहों की तलाश। कथानक और मध्य दोनों को कपट और कमीनापन से मुक्त करते हुए समय–समाज और इतिहास की धड़कनों से जोड़ने वाले आख्यान, प्रकरण, वर्णन, वार्ता संवाद श्रुति सब कुछ भी एक मार्मिक गल्प में बदलने वाली कहानियाँ। मनोहर श्याम जोशी के सामने समस्याओं की सुलगती टहनियाँ कितनी ही लपटें छोड़ रही हो, उनके चिंतन के औजार ऐसे हैं कि वे उनके सोचने का ढंग विचारों की प्रक्रिया और अर्थ संदर्भ को बदल देते हैं। सोच की गहन सूक्ष्म व्यंग्य व शक्ति, बिडंवना में समाया मानुष सच दार्शनिक युक्तियों, सूक्तियों अलंकारों में फिसलता नहीं बल्कि एकाग्र होकर समय–समाज की पीड़ाओं यातनाओं, प्रश्नाकुलताओं पर समाज तथ्यों को बटोरकर चौकन्ना सजग और प्रबुद्ध हो जाता है। जोशी की कहानियों का सृजन संघर्ष केवल

कथन और संवेदना ज्ञान और कर्म से जुड़े विचारों से ही नहीं भाषा–शब्द, अर्थ बिम्ब, चरित्र, संवाद, सभी तकनीकी में बांधकर जुड़ा रहता है।[2]

मनोहर श्याम जोशी के सम्पूर्ण कथा जगत में एक यक्ष प्रश्न बबूल के कांटे की तरह बंधा हुआ है जिसका घायलपन भीतर तक दबाए वे जिंदगी भर शहरों की सड़कों पर अटकते भटकते रहे। यह अटकन छोटी न थी, अनंत तक फैली क्रूर व्यथा कथा की तरह कसैली। भारत की शहरी कस्बाई दरिद्रताओं, यातनाओं, दिमाग चीरती चिंताओं, पश्चिमी आधुनिकताओं से उपजी विद्रूपताओं के बीच से उभरी आत्मनिर्वासन की छलनाएँ थी, जिनमें न शहर का आभिजत्य था, न कुकर्मो की कंस कथा को सुनने का धीरज। दम तोड़ती भारतीय परंपराओं की बेचैनी में फंसी जिन्दगी सिल्वर वेडिंग तो बनती है पर उसकी कीमत अदा करने में आदमी स्वयं चुक जाता है।[3]

मनोहर श्याम जोशी ऐसे साहित्यकार है, जिन्होंने आम भारतीय आदमी की संकटग्रस्त मानवीय मूल्यों को उजागर करने का साहस किया है। उनकी कुछ महत्वपूर्ण कहानियों में छिपे मानव मूल्यों को पर्दे पर लाने का प्रयास है।

सिल्वर वेडिंग कहानी जोशी जी की सबसे महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी में आधुनिक और परंपरावादी दो पीढ़ियों में आपसी द्वन्द के बीच पारिवारिक मूल्य को जोशी जी ने दृष्टांकित करने का साहस किया है। परिवार में पिता, पुत्र, पुत्री, पत्नी के बीच आपसी द्वन्द का मुख्य कारण आधुनिकता और परंपरावादी सोच के द्वन्द्व को जोशी जी ने रेखांकित किया है।

यद्यपि यशोधर बाबू की पत्नी अपने मूल संस्कारों से किसी भी तरह आधुनिक नहीं है, तथापि बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी ने उन्हें 'मॉड' बना दिया है। जिस समय यशोधर बाबू की शादी हुई थी उस समय गाँव से आये ताऊ जी और उनके दो विवाहित बेटे भी कहा करते थे। इस संयुक्त परिवार के पीछे बहुओं में गजब के तनाव थे पर ताऊ जी के डर से कोई कुछ कह नहीं पाता था।[4] संयुक्त परिवार की परंपरा रही है, घर के बड़े बुजुर्ग ही घर में मालिक हुआ करते थे पर वर्तमान समय में ये परंपरायें धीरे–धीरे टूट रही हैं। बहुओं की आपसी लड़ायी और तनाव सब अपने–अपने अहम को लेकर था, पर ताऊ जी के कारण किसी ने बोलने की हिमाकत नहीं कर पाते थे। आज के समाज में बुजुर्गों को वह सम्मान नहीं मिलता है जो मिलना चाहिए। दो घर से आयी बहुएँ सिर्फ अपना धाक जमाना जानती हैं, परिवार की परिपाटी को वे तोड़कर अपने अनुसार बूढ़े बुजुर्गों को ढालना चाहती हैं।

''यशोधर जी कहते हैं कि उन्हें समाज का सम्मानित बुजुर्ग माना जाय लेकिन जब समाज ही न होता यह पद उन्हें क्योंकर मिले ? यशोधर चाहते हैं बच्चे उनका आदर करे और उसी तरह हर बात में मुझसे सलाह लें जिस तरह में किशनदा से लिया करता था। यशोधर बाबू डेमोक्रेट हैं और हरगिज यह दुराग्रह नहीं करना चाहते कि बच्चे उनके कहे को पत्थर की लकीर समझें। लेकिन यह भी क्या हुआ कि पूछा न ताछा जिसके मन में जैसा आया करता था। ग्रंटेडः तुम्हारी नॉलेज ज्यादा होगी लेकिन लेकिन एक्सपीरियंस का कोई सबस्टिट्यूट ठहरा नहीं बेटा। मानो न मानो, झूठे मुँह से सही–एक बार पूछ लिया करो ऐसा कहते है यशोधर बाबू। और बच्चे यही उत्तर देते हैं बब्बा आप तो हद करते हैं! जो बात आप मानते ही नहीं आपसे क्यों पूँछे।[5]

आज के संदर्भ में उपर्युक्त पंक्तियां बिल्कुल सटीक बैठती है। न्यू जनरेशन लड़के/लड़कियाँ चयन अपने बुजुर्ग माँ–बाप को बिल्कुल बेवकूफ मानते हैं। उन्हें लगता है कि माँ–बाप पैदा तो कर दिये पर इन्हें आज के ग्लोबल वर्ल्ड में क्या हो रहा है, कुछ भी नहीं पता है। परम्परागत जो भी पारिवारिक मूल्य थे आज के बच्चे उन मूल्यों की खिल्ली उड़ा रहे हैं।

मनोहर श्याम जोशी की दूसरी महत्वपूर्ण कहानी 'गुड़िया' है। वास्तव यह कहानी जोशी ने बाल मनोविज्ञान को केन्द्र में रखकर लिखा है। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से मधुली का गुड़िया के प्रति प्रेम को दर्शाया गया है। यह लड़की समाज में एक गरीब परिवार से है। राजेन्द्र लाल सैप अमीर और बड़े खानदान से हैं। जब वो शहर जा रहे थे तो उन्होंने मधुली से यह वादा किया था कि शहर से उसके लिये दूध पीने वाली लायेंगे पर जब वो शहर

से लौटे तो मधुली की गुड़िया नहीं लाये हैं, हम गुड़िया बुड़िया नहीं जानते। लाल सैप ने पब्लिक स्कूल में पैसे खर्च कर सीखी हुई अकड़ से कहा मधुली ने सोचा मजाक कर रहे हैं यह तो हो ही नहीं सकता कि वह गुड़िया नहीं लायें....। लाल सैंप ने दालान से एक छड़ी उठा ली और खींचकर मधुली के कूल्हों पर मार दी....। मधुली को दर्द हुआ पर उसने यह दर्द खेल में ले लिया। स्विश! स्विश! छड़ी न लगातार दो बार कूल्हों पर किये छड़ी वाले छड़ी दलान पर पटक दी और खटा खट सीढ़ियों चढ़ने लगा...। मधुली रोते हुए घर पहुँची क्यों क्या हुआ डपट कर पूछा मधुली से राजेन्द्र लाल सैंप ने मुझे मारा। ठीक हुआ और जा लाल सैंप के पास... और घूम इधर–उधर और कर अपनी माँ को परेशान और हर चोटे के संग माँ अपनी जिन्दगी की झुझलाहट बेटी पर निकालने लगी।[6]

वास्तव में बच्चों का मन कोमल और खाली होता है जो कोई– इन्हें तूल देने को कहता है वह इनके दिमाग में पूरी तरह से फिट बैठा रहता है पर जब उनका मन टूट जाता है तो वो निराश हो जाते हैं। ऐसा ही मधुली के साथ हुआ लाल सैंप ने उन्हें धोखा दिया फिर उसे दंड़ी से दो मारा यह उसके मन को बहुत ही दुखित किया अन्त में गरीब भी ने जिन्दगी के संघर्ष की झुझलाहट उसको चाटे पर चाटे मारकर उतार रही है। यह कहानी बाल मनोविज्ञान के मूल्य को उदधृत करती है।

मंदिर के घाट की पैड़ियाँ कहानी मनोहर श्याम जोशी ने 'मुरली' नामक एक गरीब इंसान की कहानी है जो जीवन के अभावग्रस्त पल में जीता है। यह कहानी निम्न मध्यवर्गीय परिवार से तात्लुक रखती है। मुरली गरीबी से, समाज से अपने परिवार से अपूर्ण से हारा हुआ लताड़ा है और वापस फिर से बम्बई चला जाता है। मुरली बी.ए. करने के पश्चात् नौकरी करने लगा। उसने कई नौकरियाँ छोड़ी और कई नौकरियाँ पकड़ी। दिल्ली, बम्बई बंगलौर न जाने कितने शहरों में उसने नौकरी किया।

गाँव नहीं मैं बम्बई वापस जा रहा हूँ। मुरली उसी निर्णायक स्वर में कहा सूटकेस खोलकर उसने साबुन, तौलिए निकालने लगा। खुले सूटकेस को देखकर मौसी की आँखे खुली की खुली रह गयी। बढ़िया जेवर और सूट का कपड़ा देखकर मौसी कहने लगी लगता है कि अपनी बहन के लिए लायें हो।[7] सहसा मुरली की निगाह दालान की दीवार पर बने चौंड़े रंगीन चित्रों की ओर गयी जिनमें नरक की यातनाएँ दर्शायी गयी थी। इसमें यातना भोगते जब नार–नारी भी अंकित है। उसे याद आया कि इन भित्तचित्रों के समक्ष उसकी सावित्री से दिलचस्प बातचीत हुई थी। उसने कहा था मुझ पापी को तो यह नरक ही भोगना होगा।[8]

धुँआ कहानी मनोहर श्याम जोशी की सम्पूर्ण कहानियों में संकलित है। यह कहानी हीरा भंगी की कहानी है जो कस्बे के एक स्कूल में नौकर था। हीरा के चार बेटे और तीन बेटियाँ थी। हीरा को अपनी जिन्दगी से कोई शिकवा नहीं है। उसकी एक मात्र इच्छा इतनी है कि वह मौत आने से पहले अपने पौत्र का चेहरा देख ले।

गुरूदीन की बीबी पेट से है प्रसव की वेदना जब असहाय हो जाती है तो हीरा छोरा ग्यारसा के यहाँ भेजता है ग्यारसा की बीबी को बुलाने को। छोटा जब ग्यारसा के यहाँ जाती है जाते समय अपनी टूटी गृहस्थी याद आती है अपने पति के बारे में सोचती है। तवे सा काला शरीर मोटी जुल्फे लम्बी उपरसों उठी मूँछे खुँखार लाल–लाल आँखे एक छोटा मोटा दैत्य समझ लीजिए और जिस पर अव्वल दर्जे का पियक्कड़। औरत को दिन में दो दफा पीटे बिना उसे चैन नहीं आता था।[9]

हीरा गुरूदीन और यथा तीनों नये मेहमान की आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कुछ देर बाद असहाय पीड़ा घर में नन्हीं के रोने की आवाज आती है हीरा यह पूछता है क्या पैदा हुआ। वह बताती है कि बेटा पैदा हुआ है पर वह थोड़ी देर बाद उसकी मृत्यु हो जाती हीरा बहुत ही निराश होता है। उसकी सारी उम्मीद पर पानी फिर जाता है। पूरे परिवार में दुःख का आलम फैल जाता है। धुंआ कहानी में हीरा भंगी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। अपनी गरीबी और बच्चों की बेकारी के बीच जन्मुआ पोते की मौत हीरा को अन्दर ही अन्दर तोड़ देती है।

जिन्दगी चौराहे पर कहानी में जोशी जी ने आर्थिक मूल्य को रेखांकित करने का प्रयास किया है। महेश जीवन की विकट परिस्थितियों से लड़ता जूझता है। उसका मानना है कि जीवन में सफलता का सिर्फ और सिर्फ एक ही मानदण्ड पैसा है।

शक्करपारे कहानी में जोशी जी ने बाल मनोविज्ञान को उदधृत करने का प्रयास किया है। उसका विस्तार कहानी में जोशी जी ने आर्थिक मूल्य को रेखांकित करने का प्रयास किया है। महानगर दिल्ली जैसे बड़े शहर में एक युवक बड़ी ही मुश्किल से नौकरी ढूढ़ता है, रहने की जगह उसे बड़ी ही मुश्किल से मिलती है। गर्मी के दिनों में लोग अपनी चारपाई बाहर निकाल कर सोते हैं, पर उस युवक के पास चारपाई भी नहीं है।

बजट चारपाई की अनुमति दे नहीं रहा था, लेकिन चारपाई ही न होना शरीफ मध्यवर्गीय लोगों के साथ रह सकना असम्भव बना रहा था, लिहाजा उसने सिगरेट की जगह बीड़ी अपनाने का संकल्प करके उसने सबसे सस्ती एक मूंज की चारपाई ले ली।[10]

इस कहानी के माध्यम से जोशी जी ने आर्थिक संकट में मूल्य को उजागर करने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

मनोहर श्याम जोशी जी की वर्णित कहानियाँ अलग–अलग किस्म की है। किसी कहानी में जोशी जी ने बाल मनोविज्ञान को उदधृत किया है, तो किसी कहानी में मध्यवर्गीय जीवन की आर्थिक समस्या को, किसी के प्रेम तो किसी के जीवन संघर्ष को उजागर किया है। आधुनिक समाज में मध्यवर्ग की दुर्दशा का वर्णन उनके, आर्थिक मानवीय मूल्य को उजागर करने में जोशी जी सफल रहे हैं।

निष्कर्षतः अन्त में कहा जा सकता है कि मनोहर श्याम जोशी की कहानियों में मानव मूल्यों का क्षरण प्रत्यक्ष आँखों से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। क्षरण की दिशाओं पर यदि दृष्टि डालें तो स्पष्ट हो जाता है कि चहुँ दिशाओं में सीमातीत यह क्षण हुआ है। वैयक्तिवक मूल्य आज किस साहित्य में मिलते हैं, उनके बिना पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों की सत्ता ही कहाँ है ? शारीरिक मूल्यों को तो नहीं हाँ सौन्दर्यात्मक मूल्यो इस साहित्य में बहुतायत से प्रश्रय अवश्य मिला है, लेकिन जब वह भावों का उदात्तीकरण मात्र न करके वासनात्मक उत्तेजक बनता है तो मूल्य नहीं रहता। प्रायः बहुतायत से ऐसा ही हुआ है। इस साहित्य में मानसिक और हार्दिक मूल्य भी कम देखने को मिलते हैं। भावनाओं का स्वस्थ विवेचन कम भावावेश अधिक मिलता है, जिसे मूल्यों में स्थान नहीं दिया जा सकता है। वास्तव में जो व्यक्ति का विवेक जागृत करता है, उसे मूल्य के अंतर्गत रखा जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. श्रीवास्तव, त्रिलोकीनाथ. (1990) *भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र,* हरीश प्रकाशन, आगरा, पृष्ठ क्र. 74।
2. जोशी, मनोहर श्याम. *दस प्रतिनिधि कहानियाँ,* किताब घर प्रकाशन, पृष्ठ क्र. 1।
3. जोशी, मनोहर श्याम. *दस प्रतिनिधि कहानियाँ,* किताब घर प्रकाशन, पृष्ठ क्र. 7।
4. जोशी, मनोहर श्याम. *दस प्रतिनिधि कहानियाँ,* किताब घर प्रकाशन, पृष्ठ क्र. 20।
5. जोशी, मनोहर श्याम. *दस प्रतिनिधि कहानियाँ,* किताब घर प्रकाशन, पृष्ठ क्र. 25।
6. जोशी, मनोहर श्याम. *सम्पूर्ण कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ क्र. 18।
7. जोशी, मनोहर श्याम. *सम्पूर्ण कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ क्र. 47।
8. जोशी, मनोहर श्याम. *सम्पूर्ण कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ क्र. 18।
9. जोशी, मनोहर श्याम. *सम्पूर्ण कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ क्र. 51।
10. जोशी, मनोहर श्याम. (2010) *सम्पूर्ण कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ क्र. 116।

****